AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National

ISSN: 2321-3914
Volume 1 Issue 3
March 2021
Impact Factor: 11.9
Subject: Humanities

स्वामी विवेकानंद एवं सनातन भारतीय परंपरा

Dr. Parveen Kumar

Assistant Professor (Sanskrit)

D.A.V.College, Pehowa

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/ OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE)

आज पूरा विश्व ही जैसे हिन्दू सनातन संस्कृति की ओर आकर्षित होता दिख रहा है। आज विश्व के लगभग समस्त देशों में भारतीय न केवल शांतिपूर्ण ढंग से निवास कर रहे हैं बल्कि हिन्दू सनातन संस्कृति का अनुपालन भी अपनी पूरी श्रद्धा के साथ कर रहे हैं। भारत ने हिन्दू सनातन संस्कृति का अनुसरण करते हुए कोरोना महामारी की प्रथम एवं द्वितीय लहर को जिस प्रकार से सफलतापूर्वक नियंत्रित किया था, उससे प्रभावित होकर आज वैश्विक स्तर पर भारत की साख बढ़ी है और हिन्दू सनातन संस्कृति का अनुसरण आज पूरा विश्व ही करना चाहता है। हाल ही में इंडोनेशिया, अमेरिका, जापान, रूस, चीन, जर्मनी आदि अन्य कई देशों में हिन्दू सनातन धर्म को अपनाने वाले लोगों की संख्या बढ़ी है। विदेशों में हिन्दू सनातन संस्कृति की ओर लोगों का आकर्षण एकदम नहीं बढ़ा है इसके लिए बहुत लम्बे समय से भारत के संत, महापुरुषों एवं मनीषियों द्वारा प्रयास किए जाते रहे हैं।भारत और विवेकानंद 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में एक दूसरे के पूरक कहे जाते थे । भारत ही विवेकानंद के विग्रह के रूप में विद्यमान था तथा स्वामी विवेकानंद ही भारत की साक्षात मानवीय विभूति के रूप में अवतरित हुए थे। वे भारत के जनमानस को आंदोलित करने के लिए ही इस धरा धाम पर अवतरित हुए थे । ऐसा कौन सा भाषण व क्षेत्र नहीं होगा, जिसमें स्वामी विवेकानंद ने सुप्त भारतीय जनमानस को जगाने के लिए प्रेरित ना किया हो । वे उपनिषद के इस मंत्र के साथ अपना उद्बोधन करते थे:-

ISSN: 2321-3914
Volume 1 Issue 3
March 2021
Impact Factor: 11.9
Subject:Humanities

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत। ,शुरस्य धारा निशिता दुरत्यया।।

भारतवंशी युवाओं उठो जागो और अपने श्रेष्ठ लक्ष्य को प्राप्त करो। तेजस्वी प्रतिभा वाले महापुरुष स्वामी विवेकानंद के विचार काफी प्रभावित करने वाले थे जिसे अगर कोई अपनी जिंदगी में लागू कर ले तो सफलता जरूर हासिल होती है – यही नहीं विवेकानंद जी ने अपने अध्यात्म से प्राप्त विचारों से भी लोगों को प्रेरित किया जिसमें से एक विचार इस प्रकार है –

'उठो जागो, और तब तक नहीं रुको जब तक लक्ष्य ना प्राप्त हो'।।

स्वामी विवेकानंद ने अपने आध्यात्मिक चिंतन और दर्शन से न सिर्फ लोगों को प्रेरणा दी है बल्कि भारत को पूरे विश्व में गौरान्वित किया है। यह साधना का पथ खड़ग की धार के समान हैं, विद्वान लोग इस मार्ग को कठिन व दुर्गम बतलाते हैं अर्थात परिश्रम पूर्वक साहस का अवलंबन करो और आगे बढ़ो। आलस्य का त्याग करो। ऐसे उद्बोधन से स्वामी विवेकानंद अपने भाषणों का प्रारंभ करते थे। आलस्य को ही मृत्यु कहते थे। युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत थे। वे भारत को हर प्रकार से साधन-संपन्न, सौहार्दपूर्ण वातावरण में रहने वाले नागरिकों का देश देखना चाहते थे। जिसमें किसी भी प्रकार का भेदभाव व असमानता ना हो। उपरोक्त उपनिषद के मंत्र से स्वामी विवेकानंद भारत की सोई हुई आत्मा को जगाना चाहते थे। पाश्चात्य जगत में भारत के नाम का उद्घोष करने वाले इस महामानव ने शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में जब भाइयों और बहनों के संबोधन से अपना वक्तव्य प्रारंभ किया- उस समय मानो पूरे सभागार में कोई अदृश्य चेतना सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर रही थी। तभी अकस्मात तालियों की गड़गड़ाहट से सारा सभागार गुंजायमान हो उठा। भौतिकवादी पाश्चात्य जगत को ऐसे प्रभावित किया इस महामानव ने मानव जैसे कोई देवदूत ही ईश्वरीय संदेश देने आ गया है। पूरे अमेरिका की जनता में ऐसा संदेश गया कि इस भारतीय ऋषि की चहुदिशी मुक्त कंठ से प्रशंसा होने लगी। शिकागो के प्रत्येक मार्ग पर , स्थान- स्थान पर पोस्टर लग गए। नया ईसा मसीह आ गया है- नया ईसा मसीह आ गया है। स्वामी विवेकानंद के भाषणों का विषय वेदमंत्र, उपनिषद ,गीता तथा शंकराचार्य जी का दिव्य ग्रंथ विवेक चूड़ामणि ही होते थे। वे तर्क, मुक्ति, विचार, दर्शन और विज्ञान से ज्ञान पिपासु की जिज्ञासा शांत करते थे। भारतीय वेशभूषा की पगड़ी उन लोगों के लिए एक कुतूहल पैदा करने वाली थी । सभी इस विचित्र वेश से अकस्मात प्रभावित होते थे। स्वामी जी की तर्कशक्ति अद्भुत थी। वे प्रत्येक प्रकार से भारतीय संस्कृति और सभ्यता का पाश्चात्य जगत में डंका बजाना चाहते थे। जिसमें वे सभी प्रकार से सफल रहे। तर्कशक्ति का तो मानो स्वामी जी साक्षात विग्रह थे। सर्व

ISSN: 2321-3914
Volume 1 Issue 3
March 2021
Impact Factor: 11.9
Subject: Humanities

धर्म सम्मेलन में एक प्रदर्शनी लगी हुई थी। प्रदर्शनी में भारतीयों को नीचा दिखाने के उद्देश्य से गीता की पुस्तक सबसे नीचे रखी हुई थी। प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए स्वामी जी की नजर उस पर पड़ी , सभी ग्रंथों के नीचे गीता रखी हुई है। तो अकस्मात स्वामी जी के श्री मुख से निकला, वेल फाउंडेड- वेल फाउंडेड अर्थात सभी धर्मों की नींव गीता शास्त्र है , गीता शास्त्र है। तो वह लोग शर्मिंदा हो गए। तभी उन्होंने गीता ग्रंथ ऊपर रख दिया , तो स्वामी जी अकस्मात बोल पड़े वैल प्रोटेक्टेड- वैल प्रोटेक्टेड, वाह, क्या रक्षक है क्या रक्षक है । स्वामी विवेकानंद का पूर्व विषय वस्तु पर अधिकार था सभी उपनिषदों की विषय वस्तु उनको कंठस्थ थी। जिस भी विषय को प्रारंभ करते मानव श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते थे। एक बार किसी जिज्ञासु ने भगवान श्री कृष्ण के प्रति भी ऐसी ही अनुदार भाव दिखाते हुए प्रश्न कर दिया, कि गोपियां और ग्वाल बाल उनके पीछे पीछे क्यों चलते थे। स्वामी जी ने व्यवहारिक रूप से उसका उत्तर दिया। मंच पर भाषण देना शुरू कर दिया तथा मंच से नीचे उतर कर चल दिए। सारी जनता उनके पीछे-पीछे चली। स्वामी जी थोड़ा चल कर रुक गए तो श्रोतागण भी रुक गए। स्वामी जी ने प्रश्न किया कि आप सब लोग मेरे पीछे -पीछे क्यों आए। इस प्रकार स्वामी जी ने उन्हें श्री कृष्ण जी की लोकप्रियता का रहस्य समझाया। सर्व धर्म सम्मेलन के उद्देश्य के विषय में स्वामी जी ने बोलते हुए कहा कि जिस विराट विषय को लेकर आप लोग यहां एकत्रित हुए हैं, ऐसी बातें तो हमारे पुजारी प्रतिदिन चर्चा करते हैं।

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति

प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।

रुचीनां वैचित्र्या दजुकुटिलनानापथजुषां

नृणामेको गम्य स्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥

तीनों वेदों , सांख्य – दर्शन , योग – दर्शन, शैवमत , वैष्णव मत आदि भिन्न भिन्न मतों को मानने वाले लोग या अपने अपने सम्प्रदायों द्वारा चीन्हे गये मार्गों पर चलने वाले लोग (विभिन्न मतावलम्बी) अपनी रुचियों केअलग-अलग होने के कारण कह देते हैं कि यह (हमारा) मार्ग श्रेष्ठ है, यह मार्ग सेवन योग्य है । (किन्तु) इन सभी के द्वारा प्राप्तव्य एक आप ही हैं , ठीक उसी तरह जैसे टेढे – सीधे रास्तों से हो कर गुजरने वाली नदियों का गम्य स्थल या गंतव्य एक समुद्र ही होता है ।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National

ISSN: 2321-3914
Volume 1 Issue 3
March 2021
Impact Factor: 11.9
Subject: Humanities

परिव्राजक काल में स्वामी जी महाराज जयपुर के यहां ठहरे हुए थे। महाराजा स्वामी जी के व्यक्तित्व व वक्तृत्व से प्रभावित थे ।बहुत सम्मान करते थे ।एक दिन राज दरबार में राजगणिका का कार्यक्रम था। महाराजा ने कहा स्वामी जी यह राजगणिका है आप इसका गीत सुने। तो स्वामी जी उठकर चल पड़े, कि मैं सन्यासी होकर राजदरबार का गीत कैसे सुनू। तब उस देवी ने अपने सहायक के माध्यम से कहा कि भजन तो सुन लेंगे । स्वामी जी वहीं रुक गए। गणिका ने सूरदास जी का विश्व प्रसिद्ध पद गाया।

हमारे प्रभु, औगुन चित न धरौ।
समदरसी है नाम तुहारौ, सोई पार करौ॥
इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक परौ।
सो दुबिधा पारस नहिं जानत, कंचन करत खरौ॥
इक नदिया इक नार कहावत, मैलौ नीर भरौ।
जब मिलि गए तब एक-वरन हवै, सुरसरि नाम परौ॥
तन माया, ज्यौ ब्रहम कहावत, सूर सु मिलि बिगरौ।
कै इनकौ निरधार कीजियै कै प्रन जात टरौ॥

इस पद को सुनते ही स्वामी विवेकानंद राज दरबार में खड़े हो गए। व सजल नेत्रों से उस गणिका को मां कहकर संबोधित किया। कि मां तूने मेरे सन्यासी होने का गर्व चूर चूर कर दिया। यह है भारतीय सन्यासी परंपरा का उत्तम दृष्टांत। वह जो भी कहते थे वह व्यवहारिक रूप से प्रासंगिक होती थी । उनके जीवन के असंख्य दृष्टांत विवेकानंद साहित्य नाम से पुस्तकों में लिपिबद्ध हैं। भारत के अध्यात्म जगत की संपूर्ण दृष्टांत, पूरी साधना और विचार 19वीं सदी के इस महान सन्यासी की विचारधारा मानव जाति को कल्याण मार्ग पर ले जाने के लिए समय-समय पर मार्गदर्शन करती है। स्वामी विवेकानंद एक ऐसे महापुरूष थे जिनके उच्च विचारों, अध्यात्मिक ज्ञान, सांस्कृतिक अनुभव से हर कोई प्रभावित है। जिन्होने हर किसी पर अपनी एक अदभुद छाप छोड़ी है। स्वामी विवेकानंद का जीवन हर किसी के जीवन में नई ऊर्जा भरता है और आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। स्वामी विवेकानंद प्रतिभाशील महापुरुष थे जिन्हें वेदों का पूर्ण ज्ञान था। विवेकानंद जी दूरदर्शी सोच के व्यक्ति थे जिन्होनें न सिर्फ भारत के विकास के लिए काम किया बल्कि लोगों को जीवन जीने की कला भी सिखाई।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National

ISSN: 2321-3914
Volume 1 Issue 3
March 2021
Impact Factor: 11.9
Subject: Humanities

- विवेकानंद जी का साहित्य
- 10 volumes of Swami Vivekananda
- कर्मयोग
- राजयोग
- लेक्चर्स फ्रॉम कोलंबो टू अल्मोड़ा
- माई मास्टर
- ज्ञानयोग
- भक्ति योग

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and the entire content is genuinely mine. If any issue arise related to Plagiarism / Guide Name / Educational Qualification /Designation/Address of my university/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright / Patent/ Submission for any higher degree or Job/ Primary Data/ Secondary Data Issues, I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof andAddress Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me

Dr. Parveen Kumar